

भगवान बाहुबली का अहिंसात्मक युद्धकला और उनकी तप साधना

इस युग के चरमशरीरियों में सर्वप्रथम मोक्ष जाने भगवान बाहुबली के चरणों में कोटि कोटि नमोस्तु!!

- डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़, सागर
(राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त)
संयुक्त मंत्री
अ.भा.दि. जैन शास्त्र परिषद्

प्रस्तावना - भारतीय दर्शन में दो धाराएँ हैं - श्रमण धारा और वैदिक धारा। इन दोनों भगवान ऋषभदेव के अस्तित्व को स्वीकार किया है। भगवान ऋषभदेव आदिब्रह्मा के रूप में जाने जाते हैं। वातस्विकता में, जैन दर्शन का यह कथन - संसार के सभी जीवों के पास भगवान बनने की क्षमता है, कोई व्यक्ति विशेष ही भगवान नहीं है अपितु भगवान बनने के लिए अपने आत्मतत्त्व की प्रतीति करनी होती है और आप भगवान बन सकते हैं। भगवान ऋषभदेव ने भी अपने आत्मतत्त्व की प्रतीति की। वे वर्तमान अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर हुए। उनके पुत्रों में दो पुत्र प्रथम चक्रवर्ती भरत और दूसरे पुत्र कामदेव बाहुबली, अत्यंत प्रतापी हुए। भरत चक्रवर्ती ने छहखण्ड पर विजय प्राप्त की और बाहुबली अपने पराक्रम और सत्यनिष्ठा के लिए प्रसिद्ध थे। इस अवसर्पिणी काल में सर्वप्रथम मोक्ष जाने वालों में भगवान बाहुबली हैं। भगवान बाहुबली जैन धर्म के महान प्रतीक हैं, जिन्हें अहिंसा, त्याग, और तपस्या का आदर्श माना जाता है। उनका जीवन त्याग, अहिंसा, और आत्मज्ञान की गहन प्रेरणा देती है।

भगवान बाहुबली के जीवन के संबंध में आचार्यश्री जिनसेन स्वामी विरचित आदिपुराण, आचार्यश्री पुष्पदंत द्वारा विरचित महापुराण, भरतेश वैभव, भगवान बाहुबली स्वामी की पूजन, चालीसा, गोमेटेश गाथा एवं अन्य स्वतंत्र लेखों में तथा अनेक मुनिराजों-आर्यिका द्वारा उनके विषय में लिखी पुस्तकों एवं लेखों में वर्णन मिलता है। परंतु देखा जाए तो सभी पुस्तकों का उपजीव्य आचार्यश्री जिनसेन स्वामी विरचित आदिपुराण या आचार्यश्री पुष्पदंत स्वामी का महापुराण ही है।

भगवान बाहुबली स्वामी का परिचय - हम यहाँ वर्तमान के अनुसार काल की गणना करें तो भगवान ऋषभदेव का जन्म ईसापूर्व के अनेकानेक वर्षों पूर्व हुआ है। बाहुबली का जन्म ऋषभदेव और सुनंदा के यहाँ इक्ष्वाकु कुल में अयोध्या नगरी में हुआ था। उन्होंने चिकित्सा, तीरंदाजी, कृषि और रत्नशास्त्र

आचार्यश्री वसुनंदीजी महाराज के सान्निध्य में दिनांक 6 दिसम्बर 2024 को राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी

में योग्यता प्राप्त की। जब राजा ऋषभदेव ने दीक्षा लेने का निर्णय किया, तब उन्होंने अपना राज्य अपने १०० पुत्रों में बाँट दिया। भरत को विनीता (अयोध्या) का राज्य मिला और बाहुबली को अम्सक का जिसकी राजधानी पोदनपुर थी। भरत चक्रवर्ती जब छः खंड जीत कर अयोध्या लौटे तब उनका चक्र-रत्न नगरी के द्वार पर रुक गया। जिसका कारण उन्होंने पुरोहित से पूछा। पुरोहित ने बताया की अभी आपके भाइयों ने आपकी आधीनता नहीं स्वीकारी है। भरत चक्रवर्ती ने अपने सभी ९९ भाइयों के यहाँ दूत भेजे। ९८ भाइयों ने अपना राज्य भरत को दे दिया और जैन दीक्षा लेकर जैन मुनि बन गए। बाहुबली के यहाँ जब दूत ने भरत चक्रवर्ती की अधीनता स्वीकारने का सन्देश सुनाया तब बाहुबली को क्रोध आ गया। उन्होंने भरत चक्रवर्ती के दूत को कहा कि भरत युद्ध के लिए तैयार हो जाएँ। सैनिक-युद्ध न हो इसके लिए मंत्रियों ने तीन युद्ध सुझाए जो भरत और बाहुबली के बीच हुए। यह थे, दृष्टि युद्ध, जल-युद्ध और मल-युद्ध। तीनों युद्धों में बाहुबली की विजय हुई।

इस युद्ध के बाद बाहुबली को वैराग्य हो गया और वे सर्वस्व त्याग कर दिगम्बर मुनि बन गये। उन्होंने एक वर्ष तक बिना हिले खड़े रहकर कठोर तपस्या की। इस दौरान उनके शरीर पर बेले लिपट गयी। एक वर्ष के पश्चात् भरत उनके पास आये और उन्हें नमन किया। इससे बाहुबली के मन में अपने बड़े भाई को नीचा दिखाने की ग्लानि समाप्त हो गई और उनके चार घातिया कर्मों का नाश हो गया। तब उन्हें केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई और वे इस अवसिर्पणी काल के प्रथम केवली बन गए। इसके पश्चात् उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई।

आदिपुराण के अनुसार बाहुबली इस युग के प्रथम कामदेव थे। इस ग्रंथ की रचना आचार्य जिनसेन ने ७वीं शताब्दी में संस्कृत भाषा में की थी। यह ग्रंथ भगवान ऋषभदेव की दस पर्यायों तथा उनके पुत्र भरत और बाहुबली के जीवन का वर्णन करता है।

भगवान बाहुबली का अहिंसात्मक युद्ध - विवाद को रक्तपात से बचाने के लिए दोनों भाइयों ने अहिंसात्मक युद्ध का निर्णय लिया।

युद्ध की विधियाँ -

1. दृष्टि युद्ध: दोनों भाई एक-दूसरे को घूरते रहे, लेकिन हार-जीत नहीं हुई।
2. जल-युद्ध: पानी के माध्यम से अपने कौशल का प्रदर्शन किया।
3. मल्ल-युद्ध: कुश्ती का आयोजन किया गया।

इन अहिंसात्मक विधियों में बाहुबली विजयी हुए। इसके पश्चात् भरत ने चक्ररत्न को बाहुबली के संहार की आज्ञा दी पर चक्ररत्न बाहुबली की पद्रक्षिणा करके बिना उन्हें कोई क्षति पहुंचाए वापस लौट आया। बाहुबली ने इस द्वन्द्व युद्ध में विजय प्राप्त की। फिर वे चरम देहधारी और एक ही पिता के पुत्र थे अतएव चक्ररत्न उनके सामने निःशक्त था। चक्ररत्न ने बाहुबली की तीन प्रदक्षिणाएं की और फिर स्थिर हो गया। भरत के इस आचरण को देखकर बाहुबली का मन और भी अरुचि से भर गया और उन्होंने सोचा - सत्ता के लिए मनुष्य अपने भाई की भी हत्या करने में संकोच नहीं करेगा। उन्होंने कहा - हम एक महान् राज के पुत्र हैं पर हमने अपने प्रजाजनों के लिए क्या उदाहरण स्थापित किया है? राजद्रोह के विचार! ऐसा राज्य किसे चाहिए जो भाई को भाईयों का शत्रु बना दे? और ऐसा कहकर उन्होंने वन की ओर प्रस्थान कर दिया। भरत का हृदय पश्चात्ताप से भर गया। रोते हुए ही उन्होंने कहा - यदि तुम तपस्या के लिए चले जाओगे तो यह राज्य मुझे भी नहीं चाहिए। पर बाहुबली अपने निर्णय पर स्थिर रहे और वन में तपस्या के लिए चले गए।

भगवान बाहुबली स्वामी की तप साधना -

त्याग और तप साधना - युद्ध के बाद बाहुबली ने महसूस किया कि विजय और पराक्रम अंततः संसार में बंधन ही लाते हैं।

1. राज्य का त्याग: - बाहुबली ने सत्ता, धन, और वैभव का त्याग किया। वे संन्यासी बन गए और आत्मज्ञान की खोज में तपस्या करने लगे।
2. तपस्चर्या का प्रारंभ: - बाहुबली ने कठोर तपस्या का मार्ग अपनाया। वे कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़े होकर ध्यानमग्न हो गए। लंबे समय तक एक ही स्थान पर खड़े रहने के कारण उनके शरीर के चारों ओर लताएं उग गईं और चींटियों ने उनके पैरों के पास बिल बना लिया।
3. आत्मज्ञान की प्राप्ति: - गहरी तपस्या के बाद बाहुबली ने अहंकार और मोह को पूरी तरह से त्याग दिया। उन्हें केवलज्ञान (सर्वज्ञान) की प्राप्ति हुई।

भगवान बाहुबली का संदेश -

1. अहिंसा का आदर्श: - बाहुबली का जीवन अहिंसा की शक्ति को दर्शाता है। उन्होंने दिखाया कि युद्ध भी अहिंसात्मक हो सकता है।

आचार्यश्री वसुनंदीजी महाराज के सान्निध्य में दिनांक 6 दिसम्बर 2024 को राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी

2. त्याग और आत्मसंयमः - बाहुबली का तप और त्याग जीवन की नश्वरता और आध्यात्मिकता के महत्व को सिखाता है।

3. आत्मज्ञान की प्रेरणाः - बाहुबली ने सिखाया कि आत्मा को शुद्ध करने के लिए आत्मानुशासन और ध्यान आवश्यक हैं।

निष्कर्ष - भगवान बाहुबली का जीवन संघर्ष और साधना का अनुपम उदाहरण है। उनका अहिंसात्मक युद्ध, त्याग, और तपस्या न केवल जैन धर्म, बल्कि पूरे मानव समाज को शांति, त्याग, और आत्मज्ञान का संदेश देते हैं।